महापर्व छठ भारतीय परम्परा का वैज्ञानिक अनुष्ठान

प्रो. विवेकानंद तिवारी
अध्यक्ष, आम्बेडकरपीठ
एचपीयू, शिमला

छठ पर्व भारतीय परम्परा का एक वैज्ञानिक आरोग्यपूर्ण अनुष्ठान है. हमारे पूर्वजों ने विज्ञान और धर्म का समन्वय करके जीवन को, स्वास्थ्य को समृद्ध करने हेतु अनेक प्रयोग किये हैं. हमारे यहां के पर्वों में धर्म और विज्ञान का सुंदर समन्वय है. कार्तिक शुक्ल पक्ष षष्ठी के दिन छठ पर्व मनाया जाता है. लेकिन दीपावली के बाद से ही इस पर्व की तैयारियां शुरू हो जाती हैं. छठ पर्व के दौरान तन की, मन की, घर आंगन की, चूल्हा चौके की, गलियों आदि की सफाई की जाती है. हमारे पूर्वजों ने छठ पर्व के साथ सफाई के महत्व को इस तरह जोड़ दिया है कि सफाई में थोड़ी सी भी त्रुटि रहने पर छठी मईया के श्राप से आदमी प्रभावित होगा अर्थात? गंदगी या गंदे वस्तुओं के सेवन से आदमी बीमार होता है इसलिए स्वास्थ्य के लिए सफाई पर विशेष ध्यान दें. छठ पर्व में प्राकृतिक, भौतिक, नैतिक, शारीरिक, मानसिक, आत्मिक एवं आध्यात्मिक स्वास्थ्य का अपूर्व संगम है. छठ पर्व की वैज्ञानिकता और आध्यात्मिकता अकाट्य है.

प्रकृति की दृष्टि से नदी, तालाब, झील तथा पोखर के जल जीवन के आधार हैं. यही कारण है कि हमारे देश में नदियों को मां का स्थान दिया गया है. आज

हमने नदियों को प्रदूषित कर दिया है. इन्हें स्वच्छ बनाने से ही जीवन के अस्तित्व को बचाया जा सकता है. सामाजिक दृष्टि से छठ पर्व में ऊंच-नीच सबका भेद मिट जाता है इस तरह से सामाजिक सद्?भाव की भावना पनपती है.

नैतिक व आध्यात्मिक दृष्टि से इसमें नैतिक सहयोग और साहचर्य के भाव का संचार होता है. खरना और छठ के दिन किये गये वैज्ञानिक उपवास में तपस्या का भाव छिपा है. तपस्या की अग्नि से जीवन की समस्त अदृश्य शत्रु-क्रोध, ईर्ष्या, द्वेष, नैराश्य, क्षोभ, भय, कुंठा तथा हिंसा का विनाश होता है. उगता सूर्य जन्म का तथा डूबता सूर्य मृत्यु का प्रतीक है. जन्म और मृत्यु एक दूसरे के पोषक हैं. पुराने का अवसान ही नवीन का विहान है. छठ पर्व हमें यही संदेश देता है- उठो ! जागो ! चलो एवं स्वयं को पहचानो.

शारीरिक स्वास्थ्य की दृष्टि से-छठ पर्व स्वास्थ्य संरक्षण एवं संवर्धन की दृष्टि से शारीरिक, पर्यावरणीय, सामाजिक एवं आसपास की सफाई का महत्व है. छठ पर्व का मूल केन्द्र बिन्दु जल में ख? होकर उगते और डूबते हुए सूर्य को अर्घ्य प्रदान करना, इसका खास महत्व है. छठ पर्व स्वास्थ्य एवं ऊर्जा का खजाना है. यह पर्व सूर्य स्नान का वैज्ञानिक महानुष्ठान है. सूर्य की किरणों में अद्भुत शक्तियां भरी हैं, यही प्राणियों और वनस्पतियों की जीवनी शक्ति है. सूर्य कि किरणें हमें हर रोगों से बचाती हैं. विभिन्न देशों में किये गये अनुसंधानों से पता चला है कि सूर्य स्नान न करने से 100 प्रकार की खतरनाक बीमारियां होती हैं जिनमें मधुमेह, घुटने, गर्दन, कमर एवं हड्डियों में दर्द, आस्टियोपोरोसिस, आस्टियोआर्थराइटिस, कैंसर, प्रोस्टेट कैंसर, ओवरी तथा गर्भाशय का कैंसर, ब्रेस्ट कैंसर आदि रोग होते हैं. इस पर्व में उगते हुए सूर्य तथा डूबते हुए सूर्य को अर्घ्य देते समय पात्र से जल सतत एवं समरूप गिरने से जल सीकर पुंज का निर्माण होता है जो सूर्य की हानिकारक अल्ट्रावायलेट किरणों को छान देती है. उपयोगी किरणें शरीर पर पड़ती हैं जो जैव रासायनिक प्रक्रिया द्वारा रोग मुक्त एवं स्वास्थ्य की वृद्धि करती हैं.

इस पर्व के अनुष्ठान से उपवास काल में शारीरिक, मानसिक तथा आध्यात्मिक विश्राम मिलता है. आटो हीलिंग तथा इम्यून सिस्टम तेज हो जाता है. इसमें उपवास का खासा महत्व है. इस पर्व को मनाने वाला साधक-साधिका ऊर्जा, आनंद से भर जाता है तथा उसका स्वास्थ्य भी अच्छा हो जाता है.

प्रिज्म थ्योरी और सेहतमंद शरीर

तर्क है कि मानव शरीर में रंगों का संतुलन बिग?ने से कई तरह के रोग होने का खतरा रहता है. ऐसे में सुबह के समय सूर्यदेव को अर्घ्य देने से शरीर पर प?ने वाले प्रकाश से रंग संतुलन बना रहता है. यह बहुत कुछ भौतिक विज्ञान के प्रिज्म के सिद्धांत से संबंधि?त है. सूर्य के प्रकाश और इस पर रंगों के प्रभाव के कारण शरीर की रोग प्रतिरोधात्मक क्षमता बढ़ जाती है. साथ ही सूर्य की रोशनी से मिलने वाला विटामिन डी भी शरीर को मिलता है. पाचन तंत्र, शरीर की ऊर्जा पर भी प्रभाव विज्ञान की दृष्टी से देखें तो दीपावली के बाद सूर्य का ताप पृथ्वी पर कम पहुंचता है. इसलिए व्रत के साथ सूर्य के ताप से ऊर्जा का संचय किया जाता है. इससे शरीर सर्दी में स्वस्थ रहता है. इसके अलावा ठंड के मौसम के आने से शरीर में कई तरह के परिवर्तन भी होते हैं. खास तौर से पाचन तंत्र पर इन परिवर्तनों का बड़ा प्रभाव पड़ता है. छठ पर्व का 36 घंटों का उपवास पाचन तंत्र के लिए लाभदायक होता है.

आशीष की काबिलियत पर फिर नेतृत्व का मोहर

राकेश शर्मा

भारतीय जनता पार्टी मध्य प्रदेश की प्रदेश कार्यकारिणी का इंतजार सभी लोग लंबे समय से कर रहे थे. भाजपा के प्रदेश अध्यक्ष हेमंत खंडेलवाल ने अपनी कार्यकारिणी जारी कर दी है. इस कार्यकारिणी में कई काबिल लोगों को जवाबदारी मिली है जिसकी तारीफ चारों तरफ हो रही है. भारतीय जनता पार्टी के नेतृत्व ने जिसमें मुख्यमंत्री डॉ मोहन यादव,प्रदेश अध्यक्ष हेमंत खंडेलवाल, संगठन महामंत्री हितानंद शर्मा सहित प्रदेश प्रभारी महेंद्र सिंह शामिल हैं, सबने एक राय होकर मीडिया की जवाबदारी अपने सबसे काबिल सेनापति आशीष अग्रवाल को उनकी काबिलियत को देखते हुए पुन: सौंपी है.

आज मीडिया जगत में आशीष अग्रवाल ने अपना एक अलग मुकाम बनाया है. आप जब भी भाजपा के मीडिया प्रभारी के कक्ष में जाएंगे वहां आपको भारी संख्या में पत्रकार बंधु उपस्थित पाए जाएंगे.जब कभी भी किसी पत्रकार बंधु पर कोई भी मुसीबत आती है,आशीष अग्रवाल उनकी मदद के लिए हमेशा तैयार रहते हैं.

आप जब भी आशीष अग्रवाल को फोन लगाते हैं तुरंत एक घंटी पर उनका फोन उठता है. सहज, सरल और मददगार आशीष अग्रवाल सबके लाडले और चहेते हैं.उन्होंने एक नई परंपरा शुरू की कि किसी भी पत्रकार बंधु का का जन्मदिन होता है उसे वह अपने कार्यालय में भव्य रूप से मनाते हैं जिसमें केक तो कटता है साथ ही सभी बंधुओ

के साथ चाय नाश्ता भी होता है, जिससे एक उत्सव का माहौल बन जाता है.

अभी कुछ दिन पूर्व एक पत्रकार बंधु पर मुसीबत आई थी,आशीष अग्रवाल सभी पत्रकार बंधुओ के साथ कंधे से कंधा मिलाकर सड़क पर बैठ गए थे.यह घटना यह दर्शाती है कि पत्रकारों के प्रति उनका कितना प्रेम और अपनत्व है.आप जब भी आशीष अग्रवाल से मिलेंगे उनके चेहरे पर एक मुस्कुराहट और अपनत्व होता है.आपकी बात को पूरी गंभीरता से सुनकर उसका जो भी समाधान होगा वह तुरंत करते हैं.आशीष अग्रवाल सहज एवं सरल रूप से सभी के लिए हमेशा उपलब्ध रहते हैं.

पार्टी के प्रति समर्पित मीडिया प्रभारी बहुत दिनों बाद प्राप्त हुआ है.आज मीडिया के बंधु उनकी तुलना प्रभात झा से करते हैं जितने काबिल मीडिया प्रभारी प्रभात झा थे उतनी काबिलियत आशीष अग्रवाल में भी है यह मीडिया बंधु कहते हैं.संस्कार उनमें कूट-कूट कर भरे हुए हैं अपने नाम के साथ अपनी मां का नाम भी जोड़ दिया है जो बहुत कम देखने में आता है. आज लोग उन्हें आशीष उषा अग्रवाल के नाम से जानते हैं आशीष उषा अग्रवाल का नाम जैसे ही मीडिया प्रभारी के रूप में घोषित हुआ पत्रकार बिरादरी में एक नया खुशी का माहौल दिखाई दिया पार्टी नेतृत्व के इस निर्णय की पत्रकार बिरादरी में भी बहुत प्रशंसा हो रही है मीडिया के भाई बंधु फूलों का गुलदस्ता लेकर आशीष अग्रवाल से मिलने पहुंचे और उन्हें बधाई दी कम समय में आशीष उषा अग्रवाल ने अपना एक नया और ऊंचा मुकाम बना लिया है.

आशीष उषा अग्रवाल को पुन: मीडिया प्रभारी बनने की हार्दिक शुभकामनाएं बधाई वह अपने जीवन में और उच्च स्थान प्राप्त करें यही शुभकामनाएं.

कार्बाइड गन

बच्चों की आंखों की रोशनी छीनने का जिम्मेदार कौन

डॉ. सुदीप शुक्ल

दीपावली के अगले दिन मैं अपने डॉक्टर मित्र के निवास पर था. उन्होंने बताया कि दीपावली की रात कई बच्चों की आंखों की रोशनी प्रभावति हुई है. ऐसा कार्बाइड गन नाम के अमानक और असुरक्षित खिलौने से हुए विस्फोट के अलग-अलग हादसों के कारण हुआ. केवल मध्यप्रदेश में 320 से अधिक बच्चों और युवाओं की आंखें जुगाड़ से बनी कार्बाइड गन के कारण बुरी तरह से प्रभावित हुई हैं. भोपाल में 189 और विदिशा जिले में लगभग पैंतीस बच्चों की आँखें प्रभावित हुई हैं. यह आंकड़ा केवल संख्या नहीं, बल्कि उन परिवारों की पीड़ा का प्रमाण है जिनका जीवन अंधकारमय हो गया है. इन दुर्घटनाओं के जिम्मेदारों को तलाशने और उन पर कड़ी कार्रवाई करने की आवश्यकता है.

कार्बाइड गन कोई सामान्य खिलौना नहीं है. यह दिखने में भले ही बच्चों को सामान्य और आकर्षक लगे पर इसके पीछे एक खतरनाक विज्ञान छिपा है. इसमें कार्बाइड और पानी की रासायनिक प्रतिक्रिया से उत्पन्न गैस का दबाव एक विस्फोटक ध्वनि पैदा करता है. यही तेज दाब जब गलत दिशा में फैलता है तब यह आँखों, कानों, चेहरे और शरीर के किसी भी भाग को गंभीर रूप से नुकसान पहुँचा देता है. बच्चों की जिज्ञासा और कार्बाइड गन के असुरक्षित होने की जानकारी न होना उनके लिए मुसीबत का कारण बन गया. इस सबके बाद भी प्रश्न यह है कि इतना खतरनाक खिलौना सरेबाजार कैसे बिक रहा था किसकी अनुमति से यह अमानक और असुरक्षित वस्तु बेची गई और शस्त्र व विस्फोटक पर नियंत्रण करने की जिम्मेदारी रखने वाले सरकारी अधिकारियों ने इस पर रोक क्यों नहीं लगाई

आतिशबाजी और विस्फोटक पदार्थों के विक्रय की अनुमति और नियंत्रण जिला प्रशासन द्वारा दी जाती है. बिना अनुमति या लाइसेंस के कोई भी व्यक्ति इस प्रकार का पदार्थ न तो खरीद सकता है और न बेच सकता है. इसके बाद भी इन गनों का बिकना प्रशासनिक लापरवाही और संवेदनहीनता का बड़ा

उदाहरण है. दीपावली के समय हर वर्ष प्रशासन द्वारा सुरक्षा के लिए दिशानिर्देश जारी किए जाते हैं, पुलिस द्वारा निरीक्षण की बातें की जाती हैं परंतु इस बार क्या यह सारी प्रक्रिया कागज़ों तक सीमित रह गई. राजधानी भोपाल में ही यदि 189 बच्चे इस हादसे का शिकार बन गए तो यह किसी की व्यक्तिगत गलती से अधिक एक सामूहिक प्रशासनिक विफलता है.

नेत्र चिकित्सक बताते हैं कि इस प्रकार की चोटें सामान्य पटाखों से कहीं अधिक गंभीर होती हैं. कार्बाइड से उत्पन्न गैस के तीव्र विस्फोट से आँखों का कॉर्निया फट जाता है, रेटिना जल जाती है और कई बार आँखों की संरचना ही नष्ट हो जाती है. कई मामलों में तो डॉक्टरों को मजबूरी में पूरी आँख निकालनी पड़ी है. पीड़ित बच्चों में से अधिकांश की उम्र आठ से पंद्रह वर्ष के बीच है. यह वह उम्र है जब उनकी आँखों में सपनों के रंग भरे होते हैं. अब उनकी आँखें हमेशा के लिए अंधकार में डूब चुकी हैं. माता-पिता की यह पीड़ा शब्दों में बयान नहीं की जा सकती. कुछ क्षण पहले तक जो बच्चा दीपावली की खुशी में झूम रहा था अगले ही पल अस्पताल के अंधेरे वार्ड में बेसुध पड़ा है.

यह त्रासदी केवल प्रशासनिक विफलता नहीं बल्कि सामाजिक असावधानी का परिणाम भी है. हमें स्वीकार करना होगा कि समाज के रूप में हम बच्चों को सुरक्षित वातावरण देने में असफल रह जाते हैं. दुकानदारों ने मुनाफे के लालच में इन गनों को धड़ल्ले से बेचा, अभिभावक यह मान बैठे कि यह केवल पटाखे का हल्का विकल्प है और प्रशासन ने अपनी निगरानी-नियंत्रण की जिम्मेदारी को नज़रअंदाज़ कर दिया. अब जब परिणाम इतने भयानक रूप में सामने हैं तो हर किसी को आत्ममंथन करना होगा कि आखिर हमारी संवेदनशीलता कहाँ खो गई

कानून की दृष्टि से देखें तो कार्बाइड जैसे रासायनिक पदार्थ का इस प्रकार उपयोग करना स्पष्ट रूप से अपराध है. भारतीय कानूनों के अंतर्गत कार्बाइड का विक्रय या प्रयोग नियंत्रित औद्योगिक वातावरण में ही किया जा सकता है. बाजार में इसका खुला विक्रय और बच्चों के हाथों में पहुँचना इन कानूनों का खुला उल्लंघन है. प्रशासन के पास न तो इस सामग्री के लाइसेंस की कोई स्वीकृति है और न ही इसके उत्पादन का कोई पंजीकरण फिर यह बाजार तक पहुँची कैसे क्या निरीक्षण की प्रक्रियाएँ केवल नाम मात्र की रह गई हैं

समय आ गया है कि सरकार और प्रशासन इस घटना को केवल दुर्घटना न मानें बल्कि इसे गंभीर अपराध के रूप में लें. दोषियों की पहचान कर उनके विरुद्ध कठोर कार्रवाई की जानी चाहिए. साथ ही इस प्रकार के जुगाड़ उत्पादों के निर्माण और विक्रय पर तत्काल प्रतिबंध लगाया जाना चाहिए. बच्चों को सुरक्षित उत्सव मनाने की जानकारी देने के लिए स्कूलों में जागरूकता अभियान चलाना अनिवार्य होना चाहिए. अभिभावकों को यह सिखाना होगा कि वे अपने बच्चों को यह समझाएँ कि दीपावली का अर्थ विस्फोट नहीं बल्कि प्रकाश, जागरूकता और आनंद है. यह घटना केवल उन परिवारों के लिए तो त्रासदी है ही जिनके बच्चे इससे प्रभावित हुए हैं इनके साथ ही यह पूरे समाज के लिए एक चेतावनी है. हर वर्ष दीपावली के समय हम पर्यावरण प्रदूषण और पटाखों से होने वाली चोटों की चर्चा करते हैं, कुछ दिन के अभियान चलाते हैं और फिर सब भूल जाते हैं. इस बार यह विस्फोट हमारी चेतना को झकझोर देने वाला है. प्रभावितों में से कई बच्चे अब जीवन भर किसी दीपक की लौ नहीं देख पाएँगे. क्या हम इस पीड़ा को केवल आँकड़ों में समेट देंगे या इससे कुछ सीखेंगे

(लेखक स्वतंत्र पत्रकार हैं)

दीपावली का असली अर्थ तभी सार्थक होगा जब हम रोशनी फैलाने के साथ विवेक भी जगाएँ. इस बार यह संकल्प लेना होगा कि अगली दीपावली सुरक्षा, जागरूकता और संवेदनशीलता की दीपावली भी होगी. इसके लिए समाज को सजग और प्रशासन को उत्तरदायी बनना होगा. यदि अब भी हमने सबक नहीं लिया तो आने वाले वर्षों में यह अंधकार और गहराता जाएगा. दीपावली का संदेश यही है कि प्रकाश से अंधकार को पराजित किया जाए. समाज को देखना होगा कि कहीं हमारी लापरवाही, असंवेदनशीलता और मौन स्वीकृति के रूप में अंधकार बाहर न होकर हमारे भीतर तो नहीं है. इस अंधकार को मिटाने के लिए ज़रूरी है कि हम न केवल दीये जलाएँ, बल्कि जिम्मेदारी का भी दीप जलाएँ. तभी बच्चे दीपावली के दीयों की चमक में अपनी आँखें झिलमिलाते हुए देख सकेंगे.

व्यंग्य

सोन पापड़ी का सफ़र ....!

रवि उपाध्याय
लेखक व्यंगकार और
राजनीतिक समीक्षक हैं)

दीपावली के त्योहार पर जितना महत्व माता लक्ष्मीपूजन, रोशनी और पटाखों मींस आतिशबाजी का है उतना ही महत्व मिठाइयों का भी है. मिठाइयों में यदि कोई अति लोकप्रिय मिठाई है तो वह मिठाई है सोनपापड़ी. इसे कई लोग सोन पापड़ी के नाम से बुलाते हैं तो कोई इसे सोहन पापड़ी कहते हैं. कहीं कहीं तो इसे पतिशा पापड़ी भी कहते हैं. लोग इसे भले ही अलग अलग नाम से जानते पहचानते हों, पर इसका रूप रंग और स्वाद लगभग एक जैसा ही है. उसमें तनिक भी फर्क नहीं पड़ता. यह वह मिठाई है जिसका सभी इतना आदर और सम्मान करते हैं कि कोई इसका भक्षण नहीं करना चाहता है.

लक्ष्मी जी के बारे में सदियों से यह कहावत प्रसिद्ध है कि लक्ष्मी चलायमान है, आज इसके पास तो कल उसके पास. उसी तरह सोन पापड़ी का डब्बा भी गजब का गति शील है. आज आपके पास आया तो कल आपसे दूसरी जगह डब्बा का जाना तय है. इसके यातायात की गति पृथ्वी से भी तेज है. सोहन पापड़ी की तुलना हमारे स्वदेशी खेल खो - खो से की जा सकती है. जिसके पास खो आती है वह तत्काल उस को दूसरे के मत्थे मढ़ देने में तनिक भी देर नहीं लगाता है. इस मिठाई का सबसे बड़ा गुण यह है कि यह लोगों को लालच दूर रखती है.इससे व्यक्ति में निरासक्ति और विराग पैदा होता है.सोन पापड़ी हमें यह भी बताती है कि दान (गिवअप) मनुष्यता का सबसे बड़ा आभूषण है. देने से ईश्वर भी खुश होते हैं. अब देखिए न दानवीर कर्ण ने तो अपना स्वर्ण कवच और महर्षि दधीचि ने तो अपनी अस्थियों से बना अस्त्र भी दान कर दिया था. इतना ही नहीं मोतीलाल नेहरू ने तो अपना बंगला आनंद भवन तक दान कर दिया था. आम आदमी के अदभुत अवतार केजरीवाल तो करोड़ों का शीश महल तज कर पंजाब चले गए. भारत ऐसे ऐसे ऐसे दानवीरों की भूमि रही है.

सोन पापड़ी वह मिठाई है जो पूरी तरह से भगवान श्रीकृष्ण द्वारा कुरूक्षेत्र में दिए गए भगवद्गीता के उपदेश पर आधारित है. सोन पापड़ी का सफ़र हमको बताता है कि जो आज तुम्हारा है वह कल किसी ओर का था ओर कल किसी ओर का होगा. व्यर्थ क्यों दु:खी होते हो. तुम क्या लेकर आए थे और क्या लेकर जाओगे. सब व्यर्थ है. क्यों दु:खी होते हो. सोन पापड़ी के डिब्बे की यात्रा पृथ्वी की गति की तरह अनंत है, चलती ही रहती है. जिस तरह हमारा आना जाना, जीवन - मृत्यु एक अनंत और अविरल यात्रा है, उसी प्रकार सोहन पापड़ी की यात्रा भी अमर और अटल है. सोन पापड़ी के लिए एक पुरानी फिल्म का यह गाना सटीक है ओह रे ताल मिले नदी के जल में, नदी मिले सागर में सागर मिले कौन से जल में कोई जाने न. ओह रे ताल मिले.....

सोन पापड़ी के साथ एक बात और खास है जिस तरह माता लक्ष्मी की पूजन कार्तिक मास की अमावस्या को ही होती है. उसी तरह सोन पापड़ी के डब्बे का अवतरण दीपावाली के त्योहार पर ही बड़ी तादाद में होता है. इस दिन इसके दर्शन सर्व सुलभ होते हैं और इसके बाद यह अंतर्ध्यान हो जाती है वैसे ही जिस अमरनाथ में बर्फानी बाबा सावन के त्योहार के बाद विलुप्त हो जाते हैं. ऐसा नहीं है कि यह विलुप्तता का गुण केवल सोहन पापड़ी में ही हो. यह गुण हमारे नेताओं में भी विद्यमान है. चुनावों के समय यह वैसे ही फैल जाते हैं जैसे बरसात के आगमन के समय मच्छर माखियां नजर आने लगती हैं. और उसके बाद तुम कौन हम कौन. आपने यह देखा होगा कि दीपावाली के पहले सोन पापड़ी आपको होटलों में बिकते नहीं मिलेगी और न ही कोई उसके बारे पूछता मिलेगा.

जिस तरह सोन पापड़ी का डब्बा इस हाथ से उस हाथ में और इस घर से उस घर में घूमता रहता है. यही हाल हमारे नेताओं का हम देख सुनते चले आ रहे हैं. जिस तरह दीपावाली का त्योहार आता है सोनपापड़ी भ्रमणशील हो जाती है. उसी तरह जब जब चुनावों का मौसम आता है नेता भी इस पार्टी से उस पार्टी में विचरण करने लगते हैं.

हम यह सोच रहे थे तभी दरवाजे पर घंटी बजी. डरते डरते हमने दरवाजा खोला तो वही हुआ जिसका डर था. छेदी बाबू हाथ में सोन पापड़ी का डब्बा थामे खड़े थे. हमने मन ही मन नारा लगाया. सोन पापड़ी अमर रहे. लगा कि सोन पापड़ी के डब्बे को भी कहीं अश्वत्थामा, हनुमान जी और आल्हा ऊदल की तरह अमरता का वरदान तो प्राप्त नहीं है. छेदी बाबू नमस्कार कर के बोले भाई साहब दीपावली की बधाई. ये सोन पापड़ी का डब्बा हमारे यहां शुक्ला जी दे गए थे. हमने सोचा क्यों न आपको दे दें ? हमारे यहां तो सब को शुगर है . सोचा आप इसके सुपात्र हैं, तो आपको भेंट है. हमने डब्बे पर हाथ फेरते हुए मन ही मन कहा क्यों बेटा फिर लौट आए ? उड़ी जहाज को पंछी फिरी जहाज को आवै.